॥ श्रीहरि ॥

'देवीपुराण [महाभागवत]-शक्तिपीठाङ्क' की विषय-सूची

निबन्ध-सूची

विषय	पृष्ठ-सख्या
१-चिदानन्दलहरी	१३
स्मरण-स्तवन	
२-वैदिक शुभाशसा	१४
३-देवीपुराण-माहात्म्य	१५
४-देवीपुराण-सूक्तिसुधा	१६
५-देवीपुराण [महाभागवत]—सिहावलोकन [राधेश्याम खेमका]	१७
६-शक्तिपीठोके प्रादुर्भावकी कथा तथा उनका परिचय	३४
७-शक्तिपीठ-रहस्य (ब्रह्मलीन धर्मसम्राट् स्वामी श्रीकरपात्रीजी महाराज)	४८
८-शक्ति—सर्वस्वरूपिणी है (अनन्तश्रीविभूषित दक्षिणाम्नायस्थ शृङ्गेरीशारदापीठाधीश्वर जगद्गुरु शकराचार्य स्वामी श्रीभारतीतीर्थजी महाराज)	५२
९-भारतीय चिन्तनपरम्परामें शक्त्युपासनाकी प्रधानता (अनन्तश्रीविभूषित श्रीद्वारकाशारदापीठाधीश्वर जगद्गुरु शकराचार्य स्वामी श्रीस्वरूपानन्द सरस्वतीजी महाराज)	५६
१०-पीठतत्त्वविमर्श (अनन्तश्रीविभूषित जगद्गुरु शकराचार्य पुरीपीठाधीश्वर स्वामी श्रीनिश्चलानन्द सरस्वताजी महाराज)	५९
११-शक्तिसञ्चयसे महाशक्तिपूजा (शिव)	६२
१२-पीठरहस्योद्भव (अनन्तश्रीविभूषित ऊर्ध्वाम्नाय श्रीकाशी-सुमेरुपीठाधीश्वर जगद्गुरु शकराचार्य स्वामी श्रीचिन्मयानन्द सरस्वतीजी महाराज)	६३

देवीपुराण [महाभागवत]

अध्याय	विषय	पृष्ठ-सख्या
१	श्रीसूत-शौनक-सवादमे देवीपुराण [महाभागवत]-का प्रारम्भ देवीपुराणकी रचनाके लिये श्रीवेदव्यासजीद्वारा भगवती दुर्गाकी उपासना भगवतीका प्रकट होकर अपने चरणतलम स्थित सहस्रदलकमलमें परमाक्षराम उत्कीर्ण देवीपुराण [महाभागवत]-का व्यासजीको दर्शन कराना और पुन व्यासजीद्वारा देवीपुराणकी रचना	६५
२	महामुनि जैमिनिद्वारा श्रीवेदव्यासजीसे शिव-नारद-सवादके रूपमे वर्णित देवीके माहात्म्यवाले देवीपुराणको सुनानेकी प्रार्थना करना	७०
३	देवीमाहात्म्य-वर्णन, देवीद्वारा त्रिदेवाको सृष्ट्यादिके कार्योंमें नियुक्त करना, आदिशक्तिका गङ्गा आदि पाँच रूपोंमे विभक्त होना ब्रह्माजीके शरीरसे मनु तथा शतरूपाका प्रादुर्भाव दक्षकी कन्याओंसे सृष्टिका विस्तार, आदिशक्तिद्वारा भगवान् शकरको भार्यारूपमें प्राप्त होनेका वर प्रदान करना	७५
४	दक्षप्रजापतिकी तपस्यासे प्रसन्न भगवती शिवाका 'सती' नामसे उनकी पुत्रीके रूपमें जन्म लेना भगवती सती एव भगवान् शिवकी परस्पर प्रीति	८१
५	दक्षप्रजापतिकी शिवके प्रति द्वेषबुद्धि महर्षि दधीचि-द्वारा दक्षको समझाना तथा भगवान् शिवके माहात्म्यका बताना	८६
६	सतीके साथ भगवान् शिवका हिमालय पर्वतपर आना सभी देवोका हिमालयपर विवाहोत्सवमे पहुँचना, नन्दीद्वारा हिमालयपर आकर शिवकी स्तुति करना ओर शकरद्वारा उनको प्रमथाधिपतिपद प्रदान करना	९०
७	भगवती सती तथा भगवान् शिवका आनन्द विहार दक्षद्वारा यज्ञ करने और उसम शकरको न बुलानेका निश्चय करना महर्षि दधीचिद्वारा दक्षकी निन्दा, नारदजीद्वारा सतीको पिताके यज्ञमें जानेके लिये प्रेरित करना	९३
८	भगवान् शकरद्वारा सतीका दक्षके घर जानेको अनुचित बताना देवी सतीके विराट्रूपको देखकर शकरका भयभीत होना सतीद्वारा काली तारा आदि अपने दस स्वरूपा (दस महाविद्याओ)-को प्रकट करना देवीका यज्ञ-भूमिके लिये प्रस्थान	१०१
९	सतीका पिताके घर पहुँचना माता प्रसूतिद्वारा सतीका सत्कार करना तथा यज्ञ-विध्वसके भयकर स्वप्नको सुनाना दक्षद्वारा शिवकी निन्दा क्रुद्ध सतीद्वारा छायासतीका प्रादुर्भाव और उसे यज्ञ नष्ट करनेकी आज्ञा देकर अन्तर्धान हो जाना छायासतीका यज्ञकुण्डमें प्रवेश	११०

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
१०-	सतीके यज्ञकुण्ड-प्रवेशका समाचार सुनकर भगवान् शकरका शोकसे विह्वल होना, उनके तृतीय नेत्रकी अग्निसे वीरभद्रका प्राकट्य, वीरभद्रद्वारा दक्षका यज्ञ-विध्वस कर उनका सिर काटना, ब्रह्माजीका भगवान् शकरसे यज्ञ पूर्ण करनेकी प्रार्थना करना, भगवान् शकरकी कृपासे दक्षका जीवित होना	११७
११-	त्रिदेवाद्वारा जगदम्बिकाकी स्तुति करना, देवीका भगवान् शकरको पार्वतीरूपमे पुन प्राप्त होनेका आश्वासन देना, छायासतीकी देह लेकर शिवका प्रलयकारी नृत्य करना भगवान् विष्णुका सुदर्शन चक्रसे सतीके अङ्गोंको काटना और उनसे इक्यावन शक्तिपीठोंका प्रादुर्भाव	१२५
१२-	शकरजीका योनिपीठ कामरूप (कामाख्या)-मे जाकर तपस्या करना जगदम्बाद्वारा प्रकट होकर शीघ्र ही गङ्गा तथा हिमालयपुत्री पार्वतीके रूपमें आविर्भूत होनेका उन्हे वर प्रदान करना भगवान् शकरद्वारा इक्यावन शक्तिपीठोंमे प्रधान कामरूपपीठके माहात्म्यका प्रतिपादन	१३३
१३-	मेनकाके गर्भसे अर्धांशसे गङ्गाके प्राकट्यका आख्यान देवर्षि नारदद्वारा हिमालयको गङ्गाका माहात्म्य सुनाना ब्रह्मादि देवताओद्वारा हिमालयसे भगवती गङ्गाको ब्रह्मलोक ले जानेकी याचना करना	१३७
१४-	ब्रह्माजीका गङ्गाजीको कमण्डलुमे लेकर स्वर्गमे आना मातासे मिले बिना गङ्गाके स्वर्गलोक चले जानेपर क्रुद्ध मेनाद्वारा उन्हे जलरूप होकर पुन पृथ्वीलोक आनेका शाप देना स्वर्गलोकमे देवी गङ्गासे भगवान् शकरका विवाह	१४४
१५-	हिमालय और मेनाकी तपस्यासे प्रसन्न हो आद्यशक्तिका 'पार्वती' नामसे हिमालयके यहाँ प्रकट होना और उन्हे दिव्य विज्ञानयोगका उपदेश प्रदान करना (भगवतीगीताका प्रारम्भ)	१४७
१६-	भगवतीगीताके वर्णनमें ब्रह्मविद्याका उपदेश, आत्माका स्वरूप अनात्मपदार्थोंमें आत्मबुद्धिका परित्याग शरीरकी नश्वरताका प्रतिपादन तथा अनासक्तयोगका वर्णन	१५३
१७-	भगवतीगीताके वर्णनमें ब्रह्मयोगका उपदेश पाञ्चभौतिक देह, गर्भस्थ जीवका स्वरूप तथा गर्भमें की गयी जीवकी प्रतिज्ञा मायासे आबद्ध जीवका गर्भसे बाहर आनेपर अपने वास्तविक स्वरूपको भूल जाना, विषयभोगोकी दु खमूलता तथा देवी-भक्तिकी महिमा	१५७
१८-	भगवतीगीताके वर्णनमे मोक्षयोगका उपदेश, देवीके स्थूल स्वरूपाम दस महाविद्याआका वर्णन, इन स्वरूपोकी आराधनासे मोक्षकी प्राप्ति, अनन्य शरणागतिकी महिमा	१६१
१९-	हिमालयको तत्त्वज्ञानका उपदेश प्रदान कर देवीका सामान्य बालिकाकी भाँति क्रीडा करना, गिरिराजद्वारा जन्म-महोत्सव षष्ठी-महोत्सव तथा नामकरण आदि उत्सवोको सम्पादित करना, भगवतीगीता (पार्वतीगीता)-के पाठकी महिमा	१६५
२०-	भगवतीका विविध बालोचित लीलाओद्वारा हिमालय तथा मेनाको आनन्दित करना देवर्षि नारदद्वारा देवीके माहात्म्यका वर्णन	१६६
२१-	शकरजीका सतीको पुन पत्नीरूपम प्राप्त करनेके लिये हिमालयपर तपस्यामे स्थित होना, दोनो सखियोंके साथ देवी पार्वतीको लेकर हिमालयका वहाँ जाना	१७०
२२-	ब्रह्माजीका तारकासुरसे पीडित देवताओको भगवान् शकरके पुत्रद्वारा उसके वधकी बात बतलाना इन्द्रद्वारा भगवान् शकरकी तपस्याको भग करनेके लिये कामदेवको हिमालयपर भेजना, भगवान् शकरकी नेत्राग्निसे उसका भस्म होना	१७४
२३-	भगवतीका कालीरूपम भगवान् शकरको दर्शन देना, भगवान् शकरद्वारा कालीके चरणकमलोको हृदयमे धारणकर उनका ध्यान करना तथा सहस्रनाम (ललितासहस्रनामस्तोत्र)-द्वारा देवीकी स्तुति	१८३
२४-	भगवान् शकरद्वारा पार्वतीके समक्ष विवाहका प्रस्ताव रखना, मरीचि आदि ऋषियोका हिमालयके पास जाकर अपनी पुत्री भगवान् शकरको समर्पित करनेका परामर्श देना तथा हिमालयद्वारा इसकी स्वीकृति	१९४
२५-	मरीचि आदि महर्षियोद्वारा भगवान् शकरका विवाह-स्वीकृतिका शुभ समाचार सुनाना, विवाहके लिये वैशाख शुक्लपक्षकी पञ्चमी तिथि निश्चित होना देवर्षि नारदद्वारा ब्रह्मादि देवताओको विवाहका निमन्त्रण देना	१९८
२६-	हिमालयके घरमे विवाहका उपक्रम प्रारम्भ भगवान् शकरके यहाँ सभी देवताओंके आगमनपर हर्षोल्लास	२०१
२७-	ब्रह्मा विष्णु तथा रतिद्वारा प्रार्थना करनेपर भगवान् शकरका कामदेवको पुन जीवित करना ब्रह्माजीके निवेदनपर भगवान् शकरका विवाहके लिये सौम्यरूप धारण करना और बडे उल्लासके साथ शिव बारातका प्रस्थान	२०३

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
२८-	हिमालयद्वारा बारातका यथोचित सत्कार करना, *शिव-पार्वतीके माङ्गलिक विवाहोत्सवका वर्णन,* शिव-पार्वतीके विवाहोत्सवके पाठकी महिमा	२०६
२९-	शिव-पार्वतीका एकान्त-विहार, पृथ्वीदेवीका गोरूप धारण कर देवताओंके साथ ब्रह्माजीके पास जाना ब्रह्माजीका उन्हें आश्वस्त करना और कुमार कार्तिकेयके प्रादुर्भाव होनेकी बात बताना	२०९
३०-	देवताओंद्वारा देवी पार्वतीकी स्तुति, भगवान् शंकरके तेजसे षण्मुख कार्तिकेयका प्रादुर्भाव देवताओंका हर्षोल्लास	२१२
३१-	कुमार कार्तिकेयका तारकासुरके विनाशके लिये ससैन्य उद्यत होना, ब्रह्माजीद्वारा उन्हें वाहनके रूपमें 'मयूर' तथा अमोघ शक्ति प्रदान करना कार्तिकेयको देवसेनाका सेनापतित्व प्राप्त होना	२१६
३२-	देवासुर-संग्राममें देवसेनापति कार्तिकेय तथा तारकासुरका भीषण युद्ध	२१८
३३-	कार्तिकेयजीद्वारा तारकासुरका वध देवसेनामें हर्षोल्लास	२२०
३४-	देवताओंद्वारा कार्तिकेयकी वन्दना ब्रह्माजीके साथ कार्तिकेयका अपने माता-पिताके पास कैलास आना भगवान् विष्णुद्वारा पुत्ररूपमें माँ पार्वतीका वात्सल्य प्राप्त करनेकी अभिलाषा प्रकट करना महादेवीद्वारा 'अभिलाषा पूर्ण होगी' इस प्रकारका वर प्रदान करना	२२२
३५-	गणेशजन्मकी कथा पार्वतीद्वारा अपने उबटनसे विष्णुस्वरूप एक पुत्रकी उत्पत्ति कर उसे नगररक्षकके रूपमें नियुक्त करना भगवान् शंकरद्वारा अनजानमें त्रिशूलद्वारा उस बालकका सिर काटना, पार्वतीका पुत्रवियोगसे दुःखी होना भगवान् शंकरद्वारा एक गजराजका सिर काटकर पुत्रके धड़से जोड़ा जाना और पुत्रका जीवित होना उसी बालक गणेशका गणपति-पदपर नियुक्त होना	२२४
३६-	रामोपाख्यानका प्रारम्भ देवी कात्यायनीकी आराधनासे रावणका त्रैलोक्यविजयी होना ब्रह्माजीकी प्रार्थनापर विष्णुका रामके रूपमें अवतरित होनेका आश्वासन देना तथा जगदम्बाद्वारा रावणके वधका उपाय बताना	२२८
३७-	शिवजीद्वारा हनुमान्‌रूपमें प्रकट होनेकी बात बताना विष्णुका महाराज दशरथके घरमें राम लक्ष्मण भरत तथा शत्रुघ्नके रूपमें प्रकट होना लक्ष्मीका सीताके रूपमें तथा अन्य देवगणोंका नल वानर आदि रूपमें प्रकट होना	२३९
३८-	भगवान् श्रीरामकी ऐश्वर्य-लीलाएँ, विश्वामित्रके यज्ञकी रक्षा जनकपुरी जाकर शिवधनुषको तोड़ना तथा विवाह, श्रीरामका वनवास, भरतद्वारा नन्दिग्राममें मुनिवृत्तिसे निवास करना, लक्ष्मणका शूर्पणखाके नाक-कान काटना रावणद्वारा सीताका हरण	२४०
३९-	सीताजीके शोकमें श्रीरामका विलाप, सुग्रीवसे मैत्री हनुमान्‌जीद्वारा समुद्र-लंघन तथा अशोकवाटिकामें श्रीसीताजीका दर्शन हनुमान्‌जीकी प्रार्थनापर लङ्कामें प्रतिष्ठित जगदम्बाद्वारा लङ्काका परित्याग करना, अशोकवाटिकाका विध्वंस, लङ्कादहन तथा हनुमान्‌जीका श्रीरामजीके पास पहुँचकर सम्पूर्ण वृत्तान्त बताना विभीषणका भगवान् श्रीरामकी शरण ग्रहण करना	२४५
४०-	समुद्रपर पुल बाँधना और श्रीरामसेनाका लङ्कापुरीमें प्रवेश रामद्वारा पितृरूपसे जयप्रदा भगवतीकी आराधना करना श्रीराम-रावण युद्धका प्रारम्भ, श्रीराम तथा उनकी सेनाके द्वारा अनेक राक्षसोंका संहार और घायल रावणका रणभूमिसे पलायन	२४८
४१-	श्रीरामका ब्रह्माजीसे विजयप्राप्तिका उपाय पूछना और ब्रह्माजीद्वारा उन्हें जगदम्बाकी उपासना करनेका परामर्श देना	२५२
४२-	ब्रह्माजीका श्रीरामको कृष्णपक्षमें ही देवीकी पूजा करनेका आदेश देना तथा स्वयंके चतुर्मुख होनेका पूर्वप्रसंग सुनाना ब्रह्मा विष्णु और शिवद्वारा देवीकी स्तुति	२५४
४३-	ब्रह्माजीद्वारा श्रीरामसे देवीकी सर्वव्यापकता तथा विभिन्न दिव्य लोकोंका वर्णन करना देवीके लोक तथा उनके स्वरूपका वर्णन श्रीरामद्वारा जगज्जननी जगदम्बाका पूजन	२६०
४४-	श्रीरामद्वारा भगवतीकी स्तुति प्रसन्न होकर जगदम्बाद्वारा विजयकी आकाशवाणी करना कुम्भकर्णका युद्धभूमिमें प्रवेश तथा श्रीरामके साथ उसका घोर युद्ध	२६७
४५-	श्रीरामकी विजयहेतु ब्रह्माजी तथा देवगणोंका देवीकी आराधना करना देवीद्वारा राक्षसोंके वधका वरदान देना	२६९
४६-	भगवती जगदम्बिकाद्वारा शारदीय पूजाविधानका निरूपण तथा उसके माहात्म्य एवं फलका कथन	२७३
४७-	श्रीरामद्वारा भगवती जगदम्बिकाका पूजन कुम्भकर्ण अतिकाय तथा मेघनादका वध श्रीरामका बिल्ववृक्षमें देवश्वराका पूजन करना भगवतीका श्रीरामको अमोघ अस्त्र प्रदान करना रावणवध तथा श्रीरामकी जय-जयकार ...	२७६
४८-	श्रीराम और देवगणोंद्वारा देवीका स्तवन ब्रह्माजीद्वारा	

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
	भगवतीका पूजन देवीके शारदीय पूजा-अनुष्ठानकी अनिवार्यता	२८२
४९-	भगवान् शिवका भगवतीसे पुरुषरूपमें अवतार लेनेकी प्रार्थना करना तथा स्वयं राधा और आठ पटरानियोंके रूपमें अवतरित होनेका आश्वासन देना, भगवतीका स्वयं कृष्णरूपसे तथा भगवान् विष्णुका अर्जुनरूपसे अवतार लेने और महाभारतयुद्धमें दुष्ट राजाओंका वध करनेकी बात बताना	२८४
५०-	कश्यप और अदितिका वसुदेव-देवकीके रूपमें जन्म कंसद्वारा देवकीके छ पुत्रोंका वध, देवीका कृष्णरूपमें देवकीके गर्भसे जन्म लेना और सिंहवाहिनीरूपमें आकाशमें स्थित हो कंसकी मृत्युकी भविष्यवाणी कर अन्तर्धान होना	२९०
५१-	पूतनाका गोकुलमें आना और कृष्णद्वारा दूधसहित उसके प्राणोंका पान करना तृणावर्तका कृष्णको उड़ाकर ले जाना और कालीरूपमें कृष्णद्वारा उसका वध करना भगवान् शिवका राधा नामसे स्त्रीरूपमें प्रकट होना	३०१
५२-	प्रजापति दक्ष और प्रसूतिकी उग्र तपस्या तथा वरप्राप्ति दक्ष और प्रसूतिका गोकुलमें नन्द और यशोदाके रूपमें जन्म लेना	३०४
५३-	भगवान् श्रीकृष्णकी बाललीला—धेनुकासुरवध कालियमर्दन, रासलीला तथा वृषभासुरवध	३०५
५४-	नारदजीका कंसको श्रीकृष्णके देवकीपुत्र होनेकी बात बताना अक्रूरका गोकुलसे श्रीकृष्ण और बलरामको ले आना कुवलयापीड चाणूर और मुष्टिकका वध श्रीकृष्णद्वारा कालिकारूपसे कंसका संहार करना तथा उग्रसेनका राज्याभिषेक कर माता-पिताको बन्धनमुक्त करना	३०९
५५-	स्वयंवरमें न बुलाये जानेपर श्रीकृष्णद्वारा रुक्मिणीका हरण राजसूययज्ञके लिये पाण्डवोंकी विजययात्रा तथा जरासन्धवध राजसूययज्ञमें कृष्णकी प्रथम पूजाका शिशुपालद्वारा विरोध तथा उसका वध द्यूतक्रीडामें हारकर पाण्डवोंका वनवास	३१५
५६-	पाण्डवोंद्वारा भगवतीकी स्तुति भगवतीद्वारा प्रसन्न होकर विजयका आशीर्वाद देना पाण्डवोंका अज्ञातवासके लिये राजा विराटके नगरमें जाना भीमद्वारा कीचक और उपकीचकोंका वध अभिमन्यु-विवाह	३२०
५७-	महाभारतयुद्धका वर्णन	३२९
५८-	श्रीकृष्ण बलराम पाण्डवों तथा अन्य वृष्णिवंशियोंका स्वर्गगमन	३३४
५९-	महाकालीके दिव्य लोकका वर्णन	३३८
६०-	वृत्रासुरके वधके लिये देवराज इन्द्रका दधीचिसे अस्थियाँ माँगना, दधीचिका प्राण-त्याग, इन्द्रद्वारा दधीचिकी अस्थियोंसे वज्र बनाकर वृत्रासुरका संहार	३४१
६१-	इन्द्रका ब्रह्महत्याके पापसे ग्रस्त होना, महर्षि गौतमकी सम्मतिसे इन्द्रका ब्रह्मलोक जाना तथा इन्द्र और ब्रह्माका वैकुण्ठलोक जाना	३४४
६२-	भगवान् विष्णुका इन्द्रसे महाकालीके लोकके विषयमें अनभिज्ञता व्यक्त करना, ब्रह्मा, विष्णु और इन्द्रका शिवलोक जाना तथा भगवान् शिवके साथ भगवती महाकालीके लोकमें जाना	३४९
६३-	ब्रह्मा विष्णु और शिवका महाकालीके दर्शन करना, ब्रह्मा और विष्णुद्वारा भगवती महाकालीकी स्तुति, भगवतीका इन्द्रको दर्शन देना तथा इन्द्रका ब्रह्महत्याजनित पापसे मुक्त होना	३५१
६४-	भगवान् शंकरके गायनसे विष्णुका द्रवीभूत होना, ब्रह्माजीद्वारा उस द्रवरूप गङ्गाको अपने कमण्डलुमें धारण करना भगवती गङ्गाका द्रवमयी हो पृथ्वीपर आना	३५७
६५-	भगवान् विष्णुका वामनरूपमें अवतार लेकर राजा बलिसे तीन पग भूमिका दान लेना तीन पगोंमें सम्पूर्ण ब्रह्माण्डको नापकर बलिको पाताल भेज देना	३५९
६६-	ब्रह्माजीद्वारा भगवती गङ्गाकी प्रार्थना करना तथा गङ्गाद्वारा पुनः तीनों लोकोंमें आनेका आश्वासन देना भगीरथद्वारा भगवान् विष्णु, भगवती गङ्गा और भगवान् शिवकी आराधना	३६२
६७-	भगीरथद्वारा अनेक नामोंसे भगवान् शिवका स्तवन तथा मनोभिलषित वरकी प्राप्ति शिवसहस्रनामस्तोत्रपाठका माहात्म्य	३६७
६८-	भगवती गङ्गाका भगवान् विष्णुके चरणकमलोंसे निकलकर सुमेरु पर्वतपर आना, पृथ्वीद्वारा गङ्गाकी स्तुति इन्द्रकी प्रार्थनापर गङ्गाकी एक धाराका स्वर्गमें प्रतिष्ठित होना तथा दूसरी धाराका सुमेरुके दक्षिण शिखरका भेदन करना	३७७
६९-	भगवान् शंकरके जटाजूटसे निकलकर गङ्गाका भूतलपर आगमन, मेना और हिमालयद्वारा उनका पूजन	३८२
७०-	भगवती भागीरथीका हरिद्वार प्रयाग होते हुए काशी-आगमन जह्नुऋषिके आश्रममें जाना और फिर समुद्रतटपर पहुँचना	३८५

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
७१-	भगवती गङ्गाका पाताललोकमें प्रवेश कर सगरपुत्रोंका उद्धार करना	३९१
७२-	गङ्गाजीके स्मरण, दर्शन और स्नानका माहात्म्य गङ्गाजीकी महिमाके सदर्भमे सर्वान्तक व्याधका आख्यान	३९७
७३-	गङ्गास्नानकी महिमा, गङ्गाके समीप श्राद्ध जप, दान तथा तर्पणका माहात्म्य और काशीकी महिमा	४०२
७४-	गङ्गामाहात्म्य-कथनके प्रसगमें धनाधिप वैश्यकी कथा	४०६
७५-	गङ्गाजीका अष्टोत्तरशतनामस्तोत्र तथा उसका माहात्म्य	४०९
७६-	कामरूपतीर्थ (कामाख्या शक्तिपीठ)-के माहात्म्यका वर्णन	४१२
७७-	कामरूपतीर्थमे प्रतिष्ठित दस महाविद्याओंका वर्णन तथा कामाख्याकवच	४१५
७८-	कामाख्यादेवी तथा सदाशिव भगवान् शकरकी उपासनाका विशेष महत्त्व, बिल्वपत्र तथा बिल्ववृक्षकी महिमा एव कामाख्यापीठका माहात्म्य	४१९
७९-	तुलसी बिल्व और आँवलावृक्षका माहात्म्य	४२२
८०-	रुद्राक्षका माहात्म्य तथा उसके धारणका फल	४२६
८१-	कलियुगके मानवोंका स्वभाव तथा भगवान् शकरकी उपासना और शिवनामसकीर्तनकी महिमा	४२८

निबन्ध-सूची

विषय	पृष्ठ-संख्या
शक्ति-उपासना और उसके विविध रूप	
१३- शक्ति-तत्त्व-विमर्श (ब्रह्मलीन धर्मसम्राट् स्वामी श्रीकरपात्रीजी महाराज)	४३३
१४- शक्ति-उपासनामें गायत्रीका महत्त्व (अनन्तश्रीविभूषित ज्योतिष्पीठाधीश्वर जगद्गुरु शकराचार्य ब्रह्मलीन स्वामी श्रीकृष्णबोधाश्रमजी महाराज)	४४१
१५- श्रीविद्या-साधना-सरणि (कविराज प० श्रीसीतारामजी शास्त्री 'श्राविद्या-भास्कर')	४४४
१६- दस महाविद्याएँ और उनकी उपासना	४५१
शक्तिपीठ-दर्शन	
१७- काशीका श्रीविशालाक्षी शक्तिपीठ (आचार्य डॉ० श्रीपवनकुमारजी शास्त्री, साहित्याचार्य विद्यावारिधि एम्०ए०, पी-एच्०डी०)	४५८
१८- कामरूप—नीलाचल-कामाख्या शक्तिपीठ (श्रीधरणीकान्तजी शास्त्री) [प्रेषक—श्रीगुरुप्रसादजी कोइराला]	४६०
१९- कन्याकुमारी शक्तिपीठ—शुचीन्द्रम् (सुश्रीरामेश्वरीदेवी)	४६४
२०- कुरुक्षेत्रका भद्रकाली शक्तिपीठ (श्रीहनुमानप्रसादजी भारका)	४६५
२१- पश्चिम-तिब्बतस्थित शक्तिपीठ—'मानसरोवर' (दडी स्वामी श्रीमद्दत्तयोगेश्वरदेवतीर्थजी महाराज)	४६६
२२- आद्याशक्ति और नेपालशक्तिपीठ—गुह्येश्वरीदेवी (डॉ० श्रीशिवप्रसादजी शमा)	४९८
२३- माँ कल्याणी (ललिता)-शक्तिपीठ—प्रयाग (प० श्रीसुशालकुमारजी पाठक)	४६९
२४- क्षीरग्राम शक्तिपीठ (श्रीसनत्कुमारजी चक्रवर्ती)	४७०
२५- बँगलादेशका करतोयातट शक्तिपीठ (श्रीगगाबख्शसिहजी)	४७१
२६- श्रीकृष्णकी क्रीडाभूमिमें माँ कात्यायनीपीठ—वृन्दावन (स्वामी श्रीविद्यानन्दजी महाराज)	४७२
२७- मथुराका प्राचीन शक्तिपीठ—चामुण्डा (डॉ० श्रीराजेन्द्ररजनजी चतुर्वेदी डी० लिट्०)	४७३
२८- आरासुरी अम्बाजी शक्तिपीठ—गुजरात [प्रे०—सुश्री उषारानी शर्मा]	४७५
२९- ज्वालाजी शक्तिपीठ—हिमाचल (डॉ० श्रीकेशवानन्दजी ममगाई)	४७६
३०- महामाया पाटेश्वरी शक्तिपीठ—देवीपाटन (श्रीगोरक्षपीठाधीश्वर महन्त श्रीअवेद्यनाथजी महाराज) [प्रेषक—प० श्रीविजयजी शास्त्री]	४७७
३१- श्रीसिद्धपीठ माता हरसिद्धिमन्दिर—उज्जैन (श्रीहरिनारायणजी नीमा)	४७८
३२- श्रीश्रीमाता त्रिपुरेश्वरी शक्तिपीठ—त्रिपुरा (श्रीअनिलकुमारजी, द्वितीय कमान अधिकारी)	४७९
३३- हृदयपीठ या हार्दपीठ—वैद्यनाथधाम (आचार्य प०श्रीनरेन्द्रनाथजी ठाकुर एम्० ए०, पी-एच्०डी०)	४८०
३४- श्रीभद्रकालीदेवी शक्तिपीठ—जनस्थान (नासिक) (डॉ० श्री आर० आर० चन्द्रानजी)	४८१
३५- उत्कलदेशका शक्तिपीठ—विरजा और विमला (श्रीजगबन्धुजी पाढी)	४८२
३६- माँ तारचण्डी शक्तिपीठ—सासाराम (स्वामी श्रीशरणानन्दजी)	४८३
३७- करवीर शक्तिपीठ—कोल्हापुर	४८५
३८- शक्तिपीठोकी दहम भावस्थिति (डॉ० श्रीकिशोरजी मिश्र वेदाचार्य)	४८७
३९- अष्टोत्तरशत दिव्य शक्ति-स्थान	४८८
४०- नम्र निवेदन एव क्षमा-प्रार्थना	४९०

चित्र-सूची

(रंगीन-चित्र)

विषय	पृष्ठ-संख्या
१-वात्सल्यमयी माँ आदिशक्ति	आवरण-पृष्ठ
२-त्रिदेवोद्वारा आदिशक्ति पराम्बाकी स्तुति	९
३-देवताओद्वारा परमात्मप्रभु भगवान् सदाशिवकी प्रार्थना	१०
४-भगवती सतीका योगाग्निमें प्रवेश	११
५-राजराजेश्वरी भगवती त्रिपुरसुन्दरीका चिद्विलास	१२
६-मर्यादापुरुषोत्तम भगवान् श्रीरामकी लीलाएँ—	
१-गुरुसेवा	२२९
२-पुष्पवाटिकामें प्रथम दर्शन	२२९
३-जनकपुरमे धनुर्भङ्ग	२२९
४-जनकनन्दिनीका पाणिग्रहण	२२९
७-भगवान् शिवद्वारा काशीमे तारक-मन्त्रका दान	२३०
८-योगेश्वर भगवान् श्रीकृष्णके विविध रूप—	
१-गौ-दानी श्रीकृष्ण	२३१
२-ध्यानपरायण श्रीकृष्ण	२३१
३-गीतावक्ता श्रीकृष्ण	२३१
४-जगद्गुरु श्रीकृष्ण	२३१
९-गङ्गावतरण—भगवती गङ्गाद्वारा शङ्खध्वनि करते राजर्षि भगीरथका अनुगमन	२३२
१०-सिद्धि-बुद्धिसहित प्रथम पूज्य भगवान् गणेश	३९३
११-षण्मुख भगवान् कार्तिकेय	३९४
१२-अपर्णा पार्वतीको भगवान् शिवके दर्शन	३९५
१३-ऋषि-मुनियों तथा देवी-देवताओंद्वारा भगवती दुर्गाकी आराधना	३९६

(रेखा-चित्र)

१-श्रीसूतजीका शौनकादि ऋषियोको देवीपुराण [महाभागवत]-की कथा सुनाना	६६
२-महामुनि जैमिनिके निवेदन करनेपर श्रीव्यासजीद्वारा भगवती-माहात्म्यका वर्णन करना	७१
३-देवर्षि नारदद्वारा भगवान् शिव एव श्रीविष्णुकी स्तुति करना	७३
४-दक्षप्रजापतिद्वारा भगवतीकी आराधना	८१
५-मेनाका देवी सतीको पुत्रीरूपमे प्राप्त करनेहेतु उनसे प्रार्थना करना	९४
६-दक्षद्वारा भगवान् विष्णुसे यज्ञकी रक्षाके लिये प्रार्थना	९५
७-भगवान् शिवद्वारा देवी सतीको पिताके यज्ञमें न जानेका परामर्श देना	१०१
८-भगवान् शिवका वीरभद्रको प्रकट करना	११७
९-दक्षद्वारा भगवान् शिवकी प्रार्थना	१२३
१०-हिमवान्द्वारा तपस्यारत शिवजीके पास जाकर उनकी प्रार्थना करना	१७१
११-देवराज इन्द्र और देवगुरु बृहस्पतिद्वारा तारकासुर-वधके लिये विचार करना	१७७
१२-देवराज इन्द्रका कामदेवको भगवान् शिवकी समाधि-भङ्ग करनेके लिये कहना	१७८
१३-कामदेवका समाधिस्थ शिवजीपर पुष्पबाण छोडना	१८२
१४-सप्तर्षियोका भगवान् शकरके पास पहुँचना	१९६
१५-भगवती पार्वती एव भगवान् शिवका विवाह	२०६
१६-गोरूपा पृथ्वीका देवताओके साथ श्रीब्रह्माजीसे अपना दु ख निवेदन करना	२१०
१७-शिवपुत्र कार्तिकेयद्वारा तारकासुरपर शक्ति-प्रहार	२२१
१८-श्रीगणेशजीका प्रादुर्भाव	२२४
१९-शूलपाणि भगवान् शकरद्वारा चलाये गये शूलसे गणेशका मस्तक कटना	२२५
२०-श्रीब्रह्माजीद्वारा भगवान् विष्णुसे दुष्ट रावणको मारनेके लिये मनुष्य-शरीर धारण करनेकी प्रार्थना करना	२३३
२१-श्रीरामका सीता एव लक्ष्मणके साथ वनवासके लिये अयोध्यासे निकलना	२४२
२२-भरत एव शत्रुघ्नका नगरवासियोसहित भगवान् श्रीरामके पास वनमे जाना	२४२
२३-शूर्पणखाका रावणसे अपनी व्यथा कहना	२४६
२४-श्रीहनुमान्जीको अशोकवाटिकामें भगवती सीताका दर्शन	२४६
२५-श्रीहनुमान्जीके द्वारा अशोकवाटिका-विध्वस	२४७
२६-सुग्रीवकी आज्ञासे मयपुत्र नलद्वारा समुद्रमे सेतुका निर्माण करना	२४९
२७-त्रिदेवोद्वारा भगवतीकी स्तुति	२५८